मीडिया का एजेंडा यह भी हो

किसी भी ऐसे प्रकाशन के लिए जो मीडिया में सकारात्मक, मानवीय मूल्यों के ध्येय के लिए समर्पित हो, व्यवसाय में मुनाफे की ही सीढ़ियाँ न चढ़ता हो, निंरतर प्रकाशित होते रहने का सचमुच ही एक अलग आनंद और चुनौती है। हर वर्ष ही उसके लिए चुनौती होता है। प्रकाशन के साथ ही पत्रकारिता ध्येयनिष्ठ हो, यह भी तो अब सरल कहाँ है? वह ध्येय, मूल्याधारित व्यक्ति और समाज में प्रतिफलित हो जाने के प्रयत्नों का सहयोगी हो। हम सब जानते हैं कि व्यवसायोन्मुख और मुनाफा केन्द्रित हो चुके मीडिया तथा अधिकतम सुविधाओं की आकांक्षा पाले मीडिया कर्मियों के मूल्य बदल चुके हैं। उनको फिर से मानवीय मूल्यों की तरफ मोड़ देने की चुनौती एक तरह से असंभव ही तो मानी जा रही है। पर इस तरह की चुनौती के साथ चल पाने का एक कारण यह भी है कि लोगों के मन में आशा है। वे हृदय से मानते हैं कि मीडिया की भूमिका मूल्याधारित समाज बनाने में सहयोग देने की है। वह सिर्फ खबरों या अपने स्पेस को बेचने का व्यवसाय मात्र नहीं है। यह विश्वास और आशा मीडिया में काम करने वालों के साथ ही उसका उपयोग करने वालों की भी है। मीडिया है भी तो उन्हीं के लिए।

सामान्यत: हम हर वर्ष कोशिश करते हैं कि अपना लक्ष्य भी तय करें। इस नये वर्ष के लिए मूल्यानुगत मीडिया का लक्ष्य है कि वह मीडिया से उन विषयों को उसके केन्द्र में लाने का आग्रह करे जो उसके हाशिये पर जा चुके हैं। हाशिये पर गये विषयों की फेहरिश्त भी काफी बड़ी है। मसलन शिक्षा, स्वास्थ्य, समावेशी विकास, स्वच्छता, गरीबी आदि। शिक्षा और चिकित्सा की सुविधा सभी को सहज तथा आसान उपलब्ध नहीं है। उच्च शिक्षा ही नहीं माध्यमिक तथा प्रारंभिक शिक्षा भी लगातार महँगी हुई है। शिक्षा उत्पाद की तरह बाजार में है। सेवा तो अब उसका एक मुखौटा ही है। वह प्रारंभ से ही प्रतियोगिता, स्पर्धा, श्रेष्ठता, मैंपन आदि को बालमन में बैठा रही है। इस तरह के मूल्य सहयोग, करूणा, समानता, समरसता आदि गुणों के विरोधी हैं। बचपन से वर्गीय भिन्नता पहनावे, वाहन तथा जेब के भारीपन से मन में धारण हो रही है। अब उच्च शिक्षा एक तो आजीविका केन्द्रित हो गई है। दूसरे वह सामान्य व्यक्ति की पहुंच के बाहर होती जा रही है।

ऐसी शिक्षा क्या उस मनुष्य को पैदा कर पायेगी कि जो समावेशी, मानवीय, करूणा जैसे मूल्यों से भरा हुआ, अपनी विशेषता और योग्यता से दूसरों का सहयोग करने के लिए तत्पर होगा। ऐसे ही चिकित्सा के हालात हैं। चिकित्सकों को यह कहने में कोई हिचक नहीं होती कि वे अब पुराने चिकित्सकों से भिन्न हैं। मरीज हमारे लिए संवेदना नहीं, आय का माध्यम है। अभी कुछ समय पूर्व ही एक मित्र ने बताया कि एक निजी अस्पताल में रेल दुर्घटना का व्यक्ति इलाज के लिये लाया गया।

चिकित्सक उसकी हालत को देखकर यह जान चुके थे कि यह कुछ घंटों का ही मेहमान है। फिर भी उन्होंने इस तथ्य को छिपाते हुए इलाज के बहाने ऐसा जाल रचा कि उनको अस्सी हजार रूपये खर्च के देने पड़े। इस बारे में और भी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम सब जानते हैं। ऐसे ही अन्य क्षेत्र हैं जिनसे यह समाज जनोपयोगी और मानवीय विकास का आधार बनता है।

यह भी अब सबको पता चल रहा है कि भारत मधुमेह तथा हृदयाघात के मामलों में विश्व के शीर्ष क्रम की ओर बढ़ता जा रहा है। तनाव तथा हताशा की स्थितियाँ तथा संख्या लगातार बढ़ रही हैं। वातावरणीय अस्वच्छता के कारण संक्रामक बीमारियाँ समाप्त नहीं हो रही है। पर मनोशारीरिक रोगों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। पहले हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ीं। अब रक्तचाप और मोटापा भी लगातार बढ़ रहा है। डायबिटीज की तो एक तरह से यह राजधानी ही बनता जा रहा है। इन सब रोगों ने अस्पतालों और चिकित्सकों को आर्थिक रूप से मजबूत ही किया है।

मूल्यानुगत मीडिया इस वर्ष यह प्रयास करेगा कि मीडिया मूल्यधारित समाज तथा समावेशी विकास के लिए हाशिये पर गये और जा रहे विषयों को अपने विमर्श के केन्द्र में लाये। वह लोगों को उनके बारे में, उनकी स्थिति के बारे में अवगत कराये। उन्हें समाज और सत्ता के एजेंडे का हिस्सा बनाये। जो सेवायें समाज के लिए आधार हैं उनका बाजारीकरण न हो यह सब चाहते हैं। पर ऐसा क्यों हो रहा है, इसकी पड़ताल कौन करेगा? मसलन अब शिक्षा और चिकित्सा ही सामान्य व्यक्ति के लिए सहज और आसान न हो तो उसके लिए क्या कुछ नहीं किया जाना चाहिये। यदि वह विमर्श और समालोचना का मुद्दा नहीं बन रहा हो तो उसके बारे में लोगों के बीच बात कैसे उठेगी। यह मुद्दा लोगों के बीच मीडिया के माध्यम से विमर्श का हिस्सा बनाया जा सकता है। सरकार आखिर इस सबको अपना प्रथम कर्तव्य क्यों नहीं मान रही है, इसे खोज कर जनचौपाल पर लाने का काम तो मीडिया को ही करना होगा।

ऐसे ही उसे उन बीमारियों के बारे में जागरूकता पैदा करनी होगी जो एक मायने में जीवनशैली संबंधी हैं। हृदय रोग, मधुमेह, तनाव, हताशा, ब्लडप्रेशर आदि बीमारियाँ सच पूछें तो मनोशारीरिक तथा जीवनशैली से जुड़ी हुई हैं। इनके लिए जागरूक होना और अपने रहन-सहन तथा खानपान में परिवर्तन करना भी दवाई ही है। यह कार्य मीडिया अच्छी तरह से कर सकता है। यदि वह इससे हटता है तो उसे किसका पक्षधर माना जायेगा और तब मीडिया के ध्येय और मूल्यों के बारे में क्या कहा जायेगा?

मीडिया और उसके एजेंडा तय करने वाले लोग इस बारे में विचार करें और तय करें कि ऐसा किस तरह से किया जा सकता है जिससे समाज के वे लोग जो असमर्थ हैं, वे लाभ उठा सकें। सोचें कि यह सेवायें लोगों की सहज पहुंच में कैसे हो सकती हैं। सोचें कि सेवा के क्षेत्र क्या मुनाफे के लिए

व्यावसायिक मानदंडों पर ही चलाये जाने चाहियें? ऐसे ही प्रश्न हमारे आपके मन में हो सकते हैं। उनपर विचार करें और सूचना एवं जानकारी के इन माध्यमों को जागरूकता तथा विमर्श का संवाहक बनायें।

****